



2026:AHC:19780

उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
रिट याचिका - बी संख्या - 292/2026

शमसुन्निशा

.....याचिकाकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य और 11 अन्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

याचिकाकर्ता(गण) के अधिवक्ता

: राजेश कुमार चित्रगुप्त

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता

: सी.एस.सी.

न्यायालय संख्या - 54

माननीय न्यायमूर्ति दिनेश पाठक

1. याचिकाकर्ता के विद्वान अधिवक्ता और राज्य-प्रत्यर्थियों के लिए विद्वान स्थायी अधिवक्ता को सुना गया।

2. वर्तमान रिट याचिका अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित अनुतोष के लिए दायर की गई है:-

"(क). परमादेश की प्रकृति की रिट, आदेश या निदेश जारी कर प्रत्यर्थी संख्या 2 को यह निदेश दिया जाए कि वह पुनरीक्षण संख्या 307/2025 (अजहर बनाम शमसुन्निशा एवं अन्य), उ.प्र.च.जो.अ. की धारा 48(1) के अंतर्गत, ग्राम करही, टप्पा करही, परगना रसूलपुर, तहसील इटवा, जिला सिद्धार्थनगर का विनिश्चय इस न्यायालय द्वारा निर्धारित समयबद्ध अवधि के भीतर विधि के अनुसार करे।"

3. विद्वान स्थायी अधिवक्ता को उपरोक्त मामले के शीघ्र निस्तारण हेतु निदेश जारी किए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



4. उपरोक्त परिप्रेक्षा में, इस मामले को लंबित रखने से कोई उपयोगी प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा, अतः इस न्यायालय को यह उचित प्रतीत होता है कि वर्तमान रिट याचिका में उल्लिखित मामले के गुण-दोष पर कोई टिप्पणी किए बिना, उप निदेशक चकबंदी (प्रत्यर्थी संख्या 2), जिनके समक्ष उपरोक्त मामला निस्तारण हेतु लंबित है, को यह निदेश देते हुए वर्तमान रिट याचिका का अंतिम रूप से निस्तारण किया जाए कि वे इस आदेश की प्रमाणित प्रति प्राप्त होने की तिथि से अधिमानतः पाँच माह की अवधि के भीतर उक्त मामले का शीघ्रता से निर्णय करें।

5. यह अपेक्षित है कि इसे विधि के अनुसार, सकारण और आख्यापक आदेश द्वारा, संबंधित पक्षकारों को सुनवाई का अवसर प्रदान करते हुए, किसी भी पक्षकार को अनावश्यक स्थगन प्रदान किए बिना विनिश्चित किया जाए।

6. उपरोक्त निदेश के साथ, वर्तमान रिट याचिका निस्तारित की जाती है।

(न्यायमूर्ति दिनेश पाठक)

28 जनवरी, 2026

प्रियंका